पुस्तकालयों और पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान प्रोफेशनल की भूमिका में अभूतपूर्व परिवर्तन और सूचना प्रौद्योगिकी : एक मूल्यांकन

प्रेम प्रकाश यादव,

वरिष्ठ असिस्टेन्ट प्रोफेसर–लाइब्रेरी राजकीय महाविद्यालय, अकबरपुर, कानपुर देहात, उ0प्र0, भारत।

शोध सारांश

आज का युग सूचना का युग है जो तीव्रगति से बढ़ती जा रही है इसको प्राप्त करने एवं एकत्रित करने में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग हो रहा है। और सूचना प्रौद्योगिकी की आवश्यकता महसूस हो रही है। क्योंकि सूचनाओं को एक स्थान पर एकत्रित करना एक दुश्कर कार्य महसूस हो रहा है। भविष्य में सभी क्षेत्रों में सूचनाओं का विस्फोट हो रहा है। इसलिये हमें सूचनाओं को सही व्यक्ति/पाठक को सही समय में पहुचानी होगी जिससे देश का विकास हो सके।

Keywords- *पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, प्रोफेशनल ,सूचना प्रौद्योगिकी ,मूल्यांकन*

शिक्षा में सूचनाओं का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। बिना सूचना के शिक्षा के विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। पुस्तकालयों के परिवर्तन में वृद्धि सूचनाओं के कारण ही हो रहा है। सूचना संचार प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया विश्व का सबसे बड़ा उद्योग बनता जा रहा है। सूचना तंत्र या सूचना प्रौद्योगिकी के आधार स्तम्भ कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाइल, टेलीविजन इत्यादि हैं।

सूचना की कीमत पाठक ही समझता है। सूचना का मूल्य उसका निर्णय में योगदान पर निर्भर करता है, सूचना की सार्थकता समय पर उपलब्धता, सही स्थान पर उपलब्धता तथा सही समय पर निर्णय क्षमता पर निर्भर करता है। वर्तमान समय में ऐसा कोई क्षेत्र छूटा नहीं है। जहां पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव न पड़ा हो। पुस्तकालय भी एक ऐसा क्षेत्र है जो सूचना से प्रभावित हुये बिना नहीं रहा है।

इतिहास कहता है कि समाज में परिवर्तन होता रहेगा। इसी प्रकार पुस्तकालयों में परिवर्तन सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हो रहा है। पहले पुस्तकालयों में सभी कार्य परम्परागत तरीके से होते थे और समय ज्यादा लगता था परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी के आ जाने से पुस्तकालयों की कार्य प्रणाली में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके पुस्तकालयों में आधुनिक सेवायें प्रदान की जा रही है। इसकी सहायता से सही व्यक्ति को सही समय पर पुस्तकालय, अपनी सेवायें सुचारू रूप से प्रदान कर रहा है, और करता रहेगा।

आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी की आवश्यकता क्यों पड़ी इसका कारण हम सभी को खोजना पड़ेगा। काफी प्रयास करने के उपरान्त निम्न कारण हमारे सामने दृष्टिगोचर होते हैं। सूचना में तीव्र वृद्धि के कारण, सूचना को मशीनी रूप में उपलब्ध होने के कारण, पुस्तकालय में बेहतर पुस्तकालय सेवायें प्रदान करने के लिए,

पुस्तकालयों में सूचना का संग्रह, वितरण हेतु संसाधन बटवारा हेतु, चयनित सूचना प्रसार सेवा एवं सामयिक अभिज्ञता सेवा हेतु सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्थानीय, राष्ट्रीय नेटवर्क हेतु इत्यादि आवश्यक है।

सूचना प्रौद्योगिकी को अपना कर पुस्तकालयाध्यक्षों और पुस्तकालय वैज्ञानिकों को पुस्तकालयों के कार्यो में तीव्र गति लायी जा सकती है। इससे धन एवं समय की बचत होती है और पाठक को सन्तुष्टि होती है।सूचना प्रौद्योगिकी की विस्तृत जानकारी हेतु पुस्तकालयों, सूचना वैज्ञानिकों, पुस्तकालय प्रोफेशनल कर्मचारियों और अधिकारियों को वृहद स्तर पर ट्रेनिंग की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे सूचना का सही प्रकार से उपयोग हो सके। पुस्तकालय में पर्याप्त मात्रा में कम्प्यूटर, सी0डी0 रोम, तथा अन्य इत्यादि की व्यवस्था तथा पुस्तकालय का विस्तृत डेटा तैयार करके पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिए जिससे पाठक पुस्तकालय की सभी गतिविधियों तथा पाठ्य सामग्री से अवगत हो सके इसमें सूचना प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान होगा। साहित्य के विस्फोट से सूचना को संभालना मुश्किल हो गया है इसमें सूचना को सम्भालने हेतु प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान समय में साहित्य इतनी तीव्रगति से प्रकाशित हो रहा है कि उसको संग्रहित और सुरक्षित रखना मुश्किल साबित हो रहा है। परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से यह कार्य भी सम्भव हो रहा है।

पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार के कार्य जैसे पुस्तक चयन, संग्रहण, सूचीकरण, वर्गीकरण, प्रलेखन सेवा, संदर्भ सेवा इत्यादि हेतु बहुतसमय लगता था परन्तु सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से बहुत ही कम समय में यह कार्य पूर्ण हो जाते हैं। सूचना को पाठकों तक शीघ्र पहुचाने हेतु सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग हो रहा है तथा पुस्तकालयों और सूचना केन्द्रों पर होने वाली देरी से छुटकारा पाने हेतु सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग हो रहा है। वर्तमान समय में पुस्तकालय के सभी विभागों में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग हो रहा है। कम्प्यूटर जनित कार्य शुद्ध, सार्थक और तीव्र गति से होते हैं। इससे धन एवं समय की बचत होती है। इससे अनुसंधान को तीव्र गति मिलती है।

पुस्तकालयों में सभी आंकड़े सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से एकत्रित हो रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पुस्तक चयन, पुस्तक आर्डर इत्यादि कार्य किये जा रहे हैं। पाठक को अपनी मनचाही पाठ्य पुस्तक बिना समय गवाये मिल जाये इसके लिए सूचीकरण के कार्य को किया जाता है। कम्प्यूटर की सहायता से सूचीकरण का कार्य शुद्धता एवं शीघ्रता से हो जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग से सूचना की पुर्नप्राप्ति सम्भव है।

सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पत्र पत्रिका का नियंत्रण का कार्य सुचारू रूप से किया जा सकता है। जैसे किस पत्रिका नवीन आर्डर देना है कौन से पत्रिका की अवधि समाप्ति हो रही है कौन सी पत्रिका नहीं आयी है इत्यादि कार्य सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से आसानी से हो सकते हैं। पत्रिका का संचालन अद्यतन रहता है तथा नियमित चलता रहता है।सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पुस्तकालयों मे पुस्तकों का आदान– प्रदान आसानी से हो जाता है। भौतिक सत्यापन आसानी से हो जाता है। कम्प्यूटर बार कोर्ड और साफ्टवेयर से परिसंचरण कार्य आसानी व शीघ्रता से हो रहा है। नये – नये साफ्टवेयर का प्रयोग हो रहा है।

पुस्तकालयों के बजट, सांख्यिकी आदि के आंकड़े सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से शीघ्रता एवं शुद्धता से हो जाते हैं। संदर्भ सेवा, अन्तः पुस्तकालय ऋण सेवा, सामयिक अभिज्ञता सेवा, चयनित प्रसार सेवा, प्रलेखन प्रदान सेवा को

सुचारू रूप से गतिमान और तीव्र बनाने हेतु सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है।

वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रमुख कार्य सूचना संग्रहण एवं पुर्नप्राप्ति ही है। वर्ड प्रोसेसर के माध्यम से 1,50,000 से अधिक सूचनायें एक साथ एकत्रित की जा सकती है। और तीव्र गतिसे वांछित सूचना विशेष समय पर पुनः प्राप्ति की जा सकती है। सूचना पुर्नप्राप्ति अति तीव्रगति से हो रहा है।

पुस्तकालयाध्यक्षों, पुस्तकालय प्रोफेशनल और सूचना वैज्ञानिकों द्वारा सूचना के संग्रह हेतु और पुर्नप्राप्ति हेतु माइक्रो फिल्म, माइक्रोकार्ड, माइक्रोफेस, कम्प्यूटर आउट पुट, माइक्रोफिल्म इत्यादि का प्रयोग हो रहा है। यह सब सूचना प्रौद्योगिकी की देन है। सूचना को गति प्रदान करने में सूचना तन्त्र का महत्वपूर्ण योगदान है।इन्टरनेट के माध्यम से इन्टरनेट रिले कार्ड, वीडियों कानफ्रेसिंग इत्यादि कार्य हो रहे हैं। यह सब धन, समय इत्यादि की बचत कर रहे हैं। इसके साथ – साथ कार्य को गति प्रदान कर रहे हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के आ जाने से पुस्तकालय में कम्प्यूटर जनित सुविधाओं का बोलवाला हो गया है। पुस्तकालय के सभी प्रोफेशनल पुस्तकालय की डिग्री के साथ–साथ कम्प्यूटर की डिग्री तथा जागरूकता की आवश्यकता महसूस हुयी है और हो रही है।

आज सूचना का युग है। आज के समय में सूचना अति महत्वपूर्ण हो गयी है। पल–पल नयी–नयी सूचनायें आ रही हैं उन्हें संग्रहित करना और पुनः प्राप्ति करना कठिन कार्य हो गया है।

आज पुस्तकालय में इन्टरनेट का उपयोग बढ़ रहा है। पाठक द्वारा सूचना की मांग लगातार बढ़ रही है। सूचना बढ़ रही है। इन सब का नियंत्रण सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही सम्भव है।

आज पुस्तकालय प्रोफेशनल को सूचना प्रौद्योगिकी या कम्प्यूटर के ज्ञान की अति आवश्यकता है। यह समय की मांग है। पाठकों की मांग है। यह पुस्तकालय की बदलती तस्वीर है। जो दिन–प्रतिदिन बदलती जा रही है। पहले ताम्र पत्र और कागज पर ही सूचनाएं एकत्रित रहती थी आज सी0डी0 पर सूचनायें उपलब्ध हो रही हैं। तथा आज सूचनायें चिप पर भी उपलब्ध हो रही है।

निष्कर्ष रूप मेंयह कह सकते हैं कि अभी सूचनाओं की मांग पाठकों द्वारा महानगरों, नगरों में तेजी से हो रही है। पुस्तकालय में कम्प्यूटर के क्रय हेतु धनराशि व्यय की जा रही है। पुस्तकालय को डिजिटल पुस्तकालय बनाया जा रहा है। आज भारत के पुस्तकालयों की तस्वीर बदल रही है। और दिन प्रतिदिन बदलती जायेगी।परन्तु विडम्बना यह है कि आज भी भारत के ग्रामीण अंचलों में स्थित कालेज के पुस्तकालय और सार्वजनिक पुस्तकालय की तस्वीर अभी भी पुरानी जैसी है। क्योंकि वहां बिजलीनहीं है और अगर बिजली है तो कम्प्यूटर नहीं है। अगर बिजली और कम्प्यूटर दोनों है तो पुस्तकालय प्रोफेशनल ट्रेंड एवं कम्प्यूटर ज्ञाता नहीं है। यह सब की कमी महसूस हो रही है।

आज भी भारत की 70 प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है इसलिए ग्रामीण अंचलों के पुस्तकालय और पुस्तकालय प्रोफेशनल और पुस्तकालय कर्मचारी को कम्प्यूटर ज्ञाता और ओरेन्टेशन प्रोग्राम की आवश्यकता है। सही मायने में ग्रामीण आंचलों के पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग हो और वहांके पाठक सूचना का लाभ उठाये तो सही मायने में भारत का विकास होगा। भारत के विकास के लिए सभी को सूचना प्रौद्योगिकी की जागरूकता की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, एस0के0 : पुस्तकालय प्रशासन एवं प्रबन्ध – नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 1999
2. Jain, M.K. and Jain Nirmal : Teaching Learning Library and Information Service : A manual – Delhi : Shipra Publication, 2008.
3. शर्मा, प्रहलाद : कम्प्यूटर और पुस्तकालय – जयपुर : अंकित पब्लिकेशन्स, 2002
4. विभिन्न समाचार पत्र/विभिन्न पत्रिकायें
5. Ramchandra and Others : Library Administration – New Delhi : Sanjay Prakashan, 2008.
6. अंसारी, एम0एम0 : पुस्तकालय संगठन एवं प्रबन्ध – वाराणसी, कला प्रकाशन, 2001.
7. Ali, Amjad: Information Technology and Libraries- Delhi, Ess Ess Publication, 2004.
8. K. Vinitha & Others: Digital Information management- Delhi, Mahamaya Publication, 2008.
9. Singh, S.P.(ed): Digital Library Technology- New Delhi, Omega Publications, 2009.

Copyright © 2017, Prem Prakash Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.